⇒ औद्योगिक संरचना में कुशल एवं व्यवसायिक श्रमिकों की आवश्यकता होती है हमने अपने विकास मॉडल को अवरुद्ध किया है हमने सर्वप्रथम प्राथमिक क्षेत्र पर तो बल दिया और फिर द्वितीयक क्षेत्र को छोड़ कर फिर तृतीयक क्षेत्र की तरफ पलायन कर गये इसी कारण कुशल श्रमिको की आवश्यकता नही हुई और भारत की शिक्षा पद्धति में इसीलिए ध्यान नही दिया गया।

प्राथमिक — द्वितीयक — तृतीयक क्षेत्र

चक्रीय बेरोजगारी :—

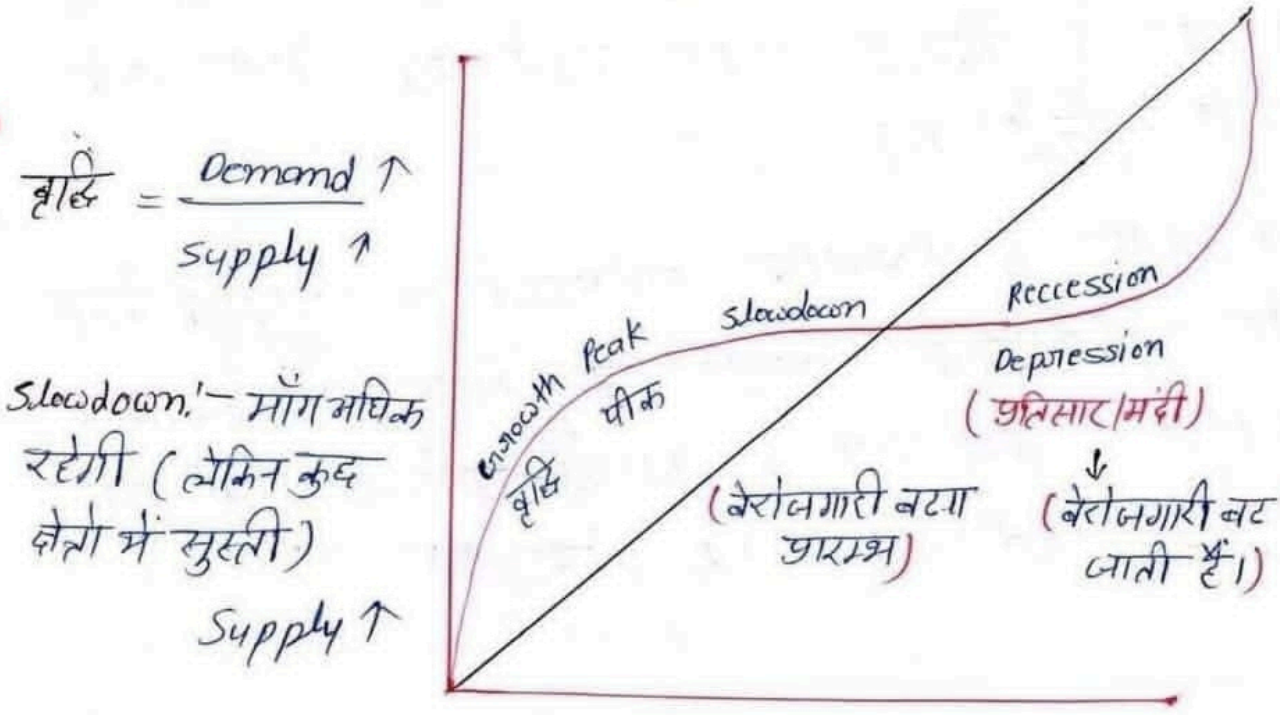

Scanned with CamScanner

शिक्षित बेरोजगारी में व्यवसायिकता की कमी देखने को मिलती है इसी कारण से इस बेरोजगारी का जन्म होता है।

भारत में व्यवसायिकता की शिक्षा में कमी :-

⇒ भारत में शिक्षा पद्धति शोध परक शिक्षा पर आधारित रही है क्योंकि धर्म और समाज के बीच गठबंधन हमेशा से ही रहा है और राजाओं ने जब शासन किया तो धर्म के आधार पर किया व्यवसाय कार्य केवल राजकीय संरक्षण में होते थे इसीलिए इनका महत्व सीमीत रहा।

⇒ भारत एक आध्यात्मिक देश रहा है और उनका शोध परक कार्य अध्यात्म पर ज्यादा रहा वह प्रकृति के विरुद्ध जाकर लड़ने की चेष्टा नही करना चाहते थे।

⇒ स्वतन्त्रता के पश्चात ससाधनो का अभाव रहा और व्यवसायिक शिक्षा के लिए संरचनात्मक विकास [स्कूल और कालेज में प्रयोगशालाओं की कमी] बहुत आवश्यक होता है।

बेरोजगारी

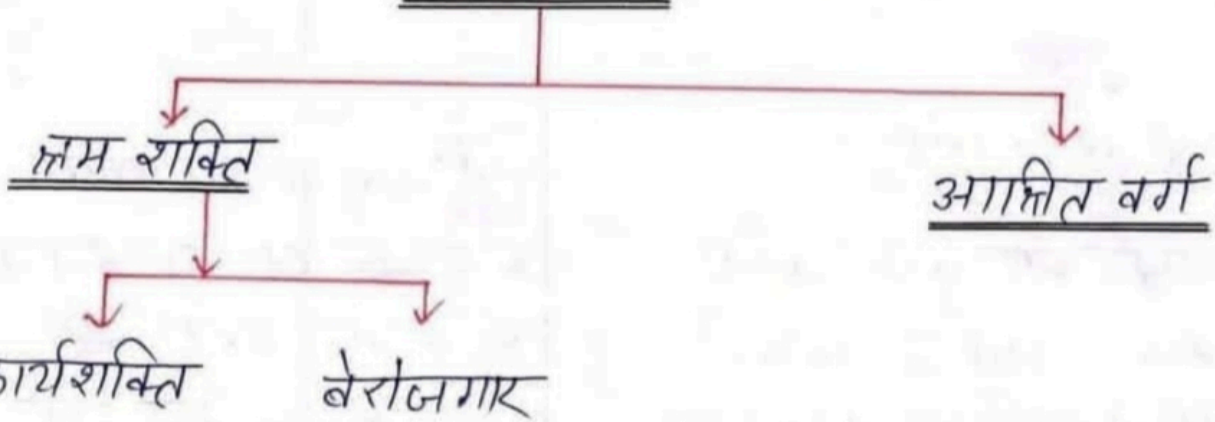

श्रम शक्ति :— 15 से 59 वर्ष की आयु के वे लोग जो अर्थव्यवस्था में कार्य कर रहे है तथा यह बेरोजगार है श्रम शक्ति के अन्तर्गत जाने जाते हैं।

श्रम शक्ति ⇒ कार्यशील + बेरोजगार

कार्यशील जनसंख्या :— श्रम शक्ति में शामिल वे लोग जो कार्य कर रहे है। कार्यशील जन संख्या के रूप में जाने जाते हैं।

बेरोजगार :— श्रम शक्ति में शामिल वे लोग जो कार्य नही कर रहे है बेरोजगार के रूप में जाना जाता है

आश्रित वर्ग :— 15 वर्ष से पहले एवं 59 से अधिक आयु के लिए जो कार्यशील जनसंख्या निर्भर है आश्रित वर्ग के रूप में जाने हैं।